HANS SHODH SUDHA, Vol. 1, Issue 2, (2020), pp. 41-45

कंदलि रामायण में अभिव्यक्त वैष्णव भक्ति का स्वरूप

रीतामणि वैश्य

सारांश:

भारतीय समाज में भक्ति सर्वकाल से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। भारतवर्ष में भक्ति की अनेकानेक पद्धतियों में प्राचीन काल से ही वैष्णव भक्ति की धारा प्रवाहमान रही है। विष्णु के अवतारों में से राम और कृष्ण सर्वाधिक लोकप्रिय रहे हैं। इन दोनों अवतारों की लीलामालाओं को लेकर देश-विदेशों में अनेक मठ एवं मंदिरों का निर्माण हुआ है । इन मठ-मंदिरों में वैष्णव भक्त श्रवण,कीर्तन करते हैं। साथ ही देश-विदेशों में लिखे गये राम और कृष्ण भक्ति से संबन्धित सैकड़ों ग्रन्थों से इन दो अवतारों की महिमा की अभिव्यक्ति की गयी। भारत के इन साहित्यिक धरोहरों में से मर्यादा पुरोषोत्तम राम के जीवन पर आधारित महाकाव्य रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रस्तावना:

महाकवि वाल्मीकि ने सबसे पहले संस्कृत भाषा में रामायण की रचना की थी। उसके बाद वाल्मीकि रामायण को आधार मानकर अनेक भाषाओं में अनेक रामकथाएँ लिखी गयी। असम में माधव कंदलि ने असमीया भाषा में रामायण की रचना की थी । माधव कंदलि चौदहवीं सदी के असम के पूर्वमध्यांचल के अधिपति बाराह राजा महामाणिक्य के राजकवि थे। कंदलि का रामायण उत्तर भारत की प्रांतीय भाषाओं में लिखित प्रथम रामायण है। आपने महाकवि वाल्मीकि विरचित संस्कृत रामायण का असमीया अनुवाद किया था। माधव कंदलि के अतिरिक्त शंकरदेव, माधवदेव ,अनंत कंदलि ,दुर्गावर, रघुनाथ महंत, शिष्ट भट्टाचार्य सहित कई कवियों ने असमीया भाषा में रामायण का प्रणयन किया था ।

असम का वैष्णव युग केवल असम के लिए ही नहीं, भारतीय वैष्णव भक्ति के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस युग में शंकरदेव ने 'एक शरण हरि नाम धर्म' की स्थापना से असम के साधारण लोगों को विष्णु भक्ति की मधुरता से आह्लादित किया था। उनके साथ माधवदेव आदि भक्तों ने वैष्णव साहित्य की एक विराट अक्षय भंडार हमें दिया । शंकरदेव से पहले भी असम में वैष्णव भक्ति की धारा प्रवाहित थी। प्राक शंकरी युग की वैष्णव भक्ति परंपरा में माधव कंदलि के रामायण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शंकरदेव की भक्ति पद्धति और साहित्य के साथ कंदलि रामायण की भावभूमि की पर्याप्त समानता पायी जाती है।

माधव कंदलि का रामायण सप्तकाण्ड का था। पर उनके रामायण में 'बालकांड', अयोध्याकांड', 'अरण्यकांड', 'किष्किन्ध्याकांड', 'सुंदरकांड', 'लंकाकांड' और 'उत्तराकांड' में से प्रथम भाग 'बालकांड' और अंतिम भाग 'उत्तराकांड' नहीं मिले। शंकरदेव ने असमीया भाषा में रामायण को पूर्णता देने के लिए अपने शिष्य माधवदेव से 'आदिकाण्ड' का अनुवाद करवाया और आपने स्वयं 'उत्तराकांड' का अनुवाद किया। एक-दो चरित पोथियों के अनुसार माधवदेव और शंकरदेव ने क्रमशः 'आदिकाण्ड' और 'उत्तराकांड' की रचना के अतिरिक्त कंदलि के रामायण के पांचों खंडों के अंत में भक्तिमूलक उपदेशों का संयोजन भी किया है। समीक्षक डॉ॰ सत्येन्द्रनाथ शर्मा का मानना है कि कंदलि के रामायण के पाँच खंडों के प्रारंभिक या अंतिम दो-तीन छंदों में यह संयोजन संभव हो सकता है। पर मूल कथा में उनके संयोजन का प्रमाण नहीं मिलता। यह संयोजन स्वीकार कर लेने पर भी कंदलि रामायण में वैष्णव भक्ति की तमाम विशेषताएँ पायी जाती हैं।

माधव कंदलि एक असाधारण पंडित थे। शंकरदेव ने माधव कंदलि के रामायण का अध्ययन किया था और उन्होंने 'उत्तराकांड' में माधव कंदलि को 'अप्रमादी कवि' कहा है-

पूर्ब्ब कबि अप्रमादी माधव कंदलि आदि तेहे बिरचिला रामकथा। हस्तीर देखिया लाद शशा येन फारे मार्ग मोर भैल तेहनय अवस्था॥ 323

(हाजरिका2015:1079)

अर्थात , मेरे पूर्व के अप्रमादी कवि माधव कंदलि ने रामकथा की रचना की। उनके सामने मैं अति नगण्य हूँ। हाथी की विष्ठा देखकर जिसतरह खरगोश भय से भाग जाता है,उनके सामने मेरी भी वैसी अवस्था है।

कंदलि का रामायण पाँच खंडों का है। अतः यह पत्र इन पाँच खंडों के आधार पर ही प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन वाल्मीकि या दूसरे रामायण से तुलना या कवि की रचना रीति के आधार पर न कर वैष्णव भक्ति के आधार पर किया गया है। कंदलि रामायण में वैष्णव धर्म से संबन्धित कई विशेषताएँ मिलती हैं। कंदलि के रामायण में आपने अपने वैष्णव भक्ति का स्वरूप स्थिर किया है। ध्यातव्य है कि ऐसी ही कुछ प्रवृत्तियाँ परवर्ती युग में शंकरदेव के मार्गदर्शन में असम की वैष्णव भक्ति परंपरा में विकसित होती दिखाई देती हैं । यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि कंदलि रामायण में उपलब्ध कुछ विशेषताएँ सर्वभारतीय भक्ति आंदोलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय भक्ति आंदोलन की मजबूत पृष्ठभूमि प्रस्तुत करनेवाले भारतीय वैष्णव भक्त कवियों में माधव कंदलि अग्रणी हैं।

वैष्णव भक्ति में विष्णु के अवतार की उपासना का विधान है। कंदलि रामायण रामभक्ति का अथाह सागर है। कवि का मानना है कि संसार के लोगों के लिए राम ही एकमात्र उपाय है। अतः यहाँ राम में शरण लेने का संदेश दिया गया है। राम के अतिरिक्त दूसरी गति नहीं है। 'सुंदराकांड' में कहा गया है-

मोर गति नाइ बिना तोमार चरणे।
बोला राम राम सभासद यत जने॥4842
(दत्तबरुवा2016:330)

(भावार्थ-तुम्हारे चरणों के बिना मेरी गति नहीं है। हे सभासदो ! राम का नाम लें ।)

राम के चरणों के बिना कोई दूसरा सार नहीं है। 'सुंदराकांड' में कवि कहते हैं-

माधव कंदलि बिप्रेताहाने चरण स्मरि
करिलंत श्लोकक उद्धार।
रामर चरण बिना आन गति नाहि हेरा
जानिबाहा मने करि सार॥ 4847
(दत्तबरुवा2016:330)

(भावार्थ-विप्र माधव कंदलि ने उनके चरणों का स्मरण कर राम के श्लोकों का उद्धार किया है। राम के चरणों के बिना कोई गति नहीं है। यह निश्चिंत रूप से जान लें।)

माधव कंदलि ने अपने आराध्या राम का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है कि राम अगम और अगोचर हैं। उनके आदि और अंत के बारे में वेद भी नहीं जानते। वे निर्गुण हैं। पर निर्गुण होते हुए भी वे असंख्य गुणों के सागर हैं। वे सर्वोत्तम हैं। उनकी तुलना किसी से नहीं हो सकती। वे जगत का हित सोचकर माया को वशीभूत करते हैं। 'लंकाकाण्ड' में कवि कहते हैं-

यार आदि अंत बेदे नजानन्त
निर्गुण गुण सागर।
यिटो सर्ब्बोत्तम नाहि यार सम
मायार यिटो ईश्वर॥
हेन देव हरि माया बश्य करि
हित चिंति जगतर।
परमात्मा तत्व भैलन्त बेकत
राजा दशरथ घर॥ 6714
(दत्तबरुवा2016:466)

(भावार्थ-जिनके आदि और अंत नहीं हैं,जिन्हें वेद भी नहीं जान सकते , वे निर्गुण होते हुए भी गुणों के सागर हैं। जो सर्वोत्तम हैं,जिनके समान कोई नहीं है, वे ही परमतत्व देवहरि माया को वशीभूत कर जगत के हित के लिए राजा दशरथ के घर में व्यक्त हुए हैं।)

वैष्णव भक्ति परंपरा में भक्ति पर अत्यधिक महत्व दिया जाता है। भक्त ईश्वर की लीलाओं के गुणगान कर धन्य हो जाते हैं। उन्हें आराध्य की लीला के भोग में अपार आनंद की अनुभूति होती है। वे भक्ति में तल्लीन होकर रहना श्रेयकर मानते हैं । यही कारण है कि वैष्णव मुक्ति से भी भक्ति पर अधिक महत्व देते हैं। माधव कंदलि के रामायण में भक्ति पर महत्व दिया गया है। 'अयोध्याकाण्ड' में कवि कहते

हैं कि जिनको भक्ति की इच्छा है,वे सावधानी से रामायण सुनें-

शुना रामायण मन सावधान करि।
भकतिक इच्छा यार डाकि बोला हरि॥ 1957
(दत्तबरुवा2016:132)

(भावार्थ- सावधानी से रामायण सुनें। जिनको भक्ति की इच्छा है,वे हरि का नाम लें।)

वैष्णव भक्ति में नवधा भक्ति को श्रेष्ठ ज्ञान किया जाता है। वैष्णव कवि माधव कंदलि ने नवधा भक्ति में से श्रवण और कीर्तन को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार राम कथा के श्रवण और कीर्तन से कलिकाल का दुख नष्ट होता है,पाप क्षय होता है और मनुष्य को इस संसार से मुक्ति मिलती है।आपने 'अयोध्याकाण्ड' में राम कथा के श्रवण से महालाभ होने की बात की है-

शुनियोक लोक संक्षेपे आछोक
इटो कथा एहिमाने॥
महालाभ जानि रामर काहिनी
शुनियोक बिद्यामाने॥ 1984
(दत्तबरुवा2016:135)

(भावार्थ-हे सभासदो ! यह जान लें । राम की कहानी सुनसे से महालाभ मिलता है। इसीलिए रामकथा सुनें।)

कंदलि रामायण में राम नाम की महिमा का बड़ा गुणगान किया गया है। राम नाम से पाप का क्षय होता है। वह धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष- सबका साधक है। इसके साथ ही नाम से मुक्ति मिलती है। 'लंकाकाण्ड' में राम नाम के स्मरण की महिमा का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं-

श्रवणे पापर क्षय मिले महा महोदय
देइ धर्म्म अर्थ मोक्ष काम।
जानि सभासद लोक सबारो
मुकुति हौक
बोला निरंतरे राम राम॥ 6207
(दत्तबरुवा2016:428)

(भावार्थ-राम नाम से पाप का क्षय होता है। यह धर्म,अर्थ,मोक्ष और काम देता है। हे सभासदो ! इसे जान लें। सबको मुक्ति मिलें। निरंतर राम नाम का स्मरण करें।)

वैष्णव भक्ति परंपरा में सत्संग पर महत्व दिया जाता है। कंदलि ने अपने रामायण में सत्संग की महिमा का वर्णन किया है । 'अयोध्याकाण्ड' में दु:संग का त्याग कर महंत के संग लेने का उपदेश दिया गया है। कवि कहते हैं -

हेन निष्ठ जानि दु:संग तेजिया
लैयो संग महन्तर।
तेसम्बे सहित बसि एक प्रीति
शुनियो कथा रामर॥ 2617
(दत्तबरुवा2016:178)

(भावार्थ-यह जानकर दु:संग का त्याग करें और महंत का संग लें। उनके साथ प्रेम से बैठकर राम की कथा सुनें।)

कंदलि रामायण में राम नाम पर सबके अधिकार की बात मानी गयी है। सभी जाति के लोग राम का भजन कर सकते हैं। 'अरण्यकांड' में कहा गया है कि राम जात-कुल का विचार नहीं करते। उनके भजन मात्र से सबका मनोरथ पूर्ण होता है -

नाबाचंत जातिकुल भजन मात्रके ।
एतेके परम सिद्धि दिबंत सबाके॥
जानिया कृपालु गुण भजियो रामक।
राम बुलि दहियोक पापर बीर्य्यक॥ 2725
(दत्तबरुवा2016:185)

(भावार्थ- राम अपने भक्तों का जाति-कुल नहीं देखते। राम के भजन मात्र से वे सबको सिद्धि देते हैं। यह जानकर कृपालु राम के गुण का भजन करें। राम के नाम से पाप को पूर्ण रूप से नाश करें।)

कंदलि के रामायण में समन्वय की भावना दर्शनीय है। एक तो कवि ने हरेक जाति के लोगों का राम भक्ति पर अधिकार होने की बात की है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने राम और कृष्ण के बीच भेद नहीं माना है। इसीलिए वे रामायण में कृष्ण का स्मरण करते हैं। 'अयोध्याकाण्ड' में वे कहते हैं कि कलि काल में माधव के

नाम के बिना कोई और गति नहीं है-

कलित संप्रति नहि आन गति

बिने माधवर नाम।
माधव कंदलि कहे निरंतरे
डाकि बोला राम राम। 2618
(दत्तबरुवा2016:178)

(भावार्थ-अब कलि काल में माधव के नाम के बिना और कोई अन्य गति नहीं है। माधव कंदलि निरंतर राम का नाम लेने को कह रहा है।)

भक्ति के संदर्भ में वैष्णव भक्ति और शैव भक्ति दो अलग-अलग भक्ति पद्धतियाँ हैं। वैष्णव भक्ति परंपरा में विष्णु के अवतारों की उपासना होती है,जबकि शैव भक्ति परंपरा में भक्तों के आराध्य हैं शिव। कंदलि ने अपने रामायण में राम और शिव को एक मानकर भक्ति के संदर्भ में समन्वय का मार्ग अपनाया है। 'लंकाकाण्ड' में वे कहते हैं-

नमो रामचन्द्र आदिदेव महेश्वर।

याहार अधीन चराचर निरंतर॥

नित्य शुद्ध बुद्ध यिटो जगत कारण।

ब्रह्मा आदि देवे सेवे याहार चरण॥5537
(दत्तबरुवा2016:381)

(भावार्थ- जो चराचर जगत जिनके अधीन हैं, जो नित्य शुद्ध हैं,बुद्ध हैं,जो जगत के कारण हैं; ब्रह्मा आदि देव भी जिनके चरणों की सेवा करते हैं, वैसे रामचन्द्र को,आदिदेव महेश्वर को नमन करता हूँ।)

माधव कंदलि की रचना की एक प्रमुख विशेषता है कि आपका रामायण राष्ट्रीय चेतना से पुष्ट है। कवि को यह अनुभव है कि भारतवर्ष एक महान और पवित्र भूमि है। इसीलिए यहाँ जन्म लेनेवाले लोगों को चाहिए कि वे इस भूमि की महानता के अनुकूल कर्म करें। जात-पात का भेदभाव छोड़ भारत के सब लोग एकजुट होकर राम की भक्ति करें। 'लंकाकाण्ड' में कवि कहते हैं-

भारतबरिष पाइले हेला नुयुवाइ।
केतिक्षणे परे इटो नरतनु काय॥
आके जानि समस्ते एरियो आनकाम।
माधव कंदलि भणे बोला राम राम॥5905
(दत्तबरुवा2016:406)

(भावार्थ- भारतवर्ष में जन्म मिला है,अवहेलना करना शोभा नहीं देता। मनुष्य का शरीर है, कब नष्ट हो जाय कहा नहीं जा सकता। यह जानकर अनया काम छोड़ें। माधव कंदलि कह रहा है कि सब राम का नाम लें।)

कंदलि रामायण में वैष्णव भक्ति की प्रवृत्ति के अनुकूल लोकरक्षण की भावना मिलती है। विष्णु के अवतार राम भक्तों के उद्धारक हैं। जो भी राम में भक्ति रखते हैं,उनके पाप का क्षय होता है और उन्हें मुक्ति मिलती है। राम की सेवा मनुष्य का धर्म है। राम कथा के श्रवण से जन्म सफल होता है,मनुष्य का कल्याण होता है। 'किष्किंधाकाण्ड' में कहा गया है-

हेन जानि रामपावे पशियो शरण।
रामर सेवा नरतनुर पालन॥
राम कथा शुना हौक जन्मर साफल।
बोला राम राम महा मिलोक मंगल॥3561
(दत्तबरुवा2016:241)

(भावार्थ-यह जानकार राम के चरणों में शरण लेता हूँ। राम की सेवा करना मनुष्य का परम धर्म है। रामकथा सुनें। इससे जन्म सफल होगा। राम के नाम का स्मरण करें। महा मंगल हों।)

माधव कंदलि का रामायण कई दृष्टियों से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनमें से एक है इसकी ऐतिहासिकता। यद्यपि यह उत्तर भारतीय भाषाओं का सबसे प्राचीन रामायण है,तथापि यह अति प्रौढ़ रचना है। गंभीर अनुभूति एवं सशक्त अभिव्यक्ति से कंदलि रामायण वैष्णव भक्ति की अनमोल रचना है। अपने सरल एवं प्रभावी भाषा और शैली से रामकथा का निर्माण किया है।

टिप्पणी:

इस शोध पत्र में कंदलि रामायण के कुछ पदों का

लिप्यंतरण किया गया है और फिर पदों के अर्थ रखे गए हैं। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है।

ग्रंथ सूची:

असमीया:

दत्तबरुवा,हरिनारायण,संपा.*सप्तकाण्ड रामायण,*चौदहवीं.गुवाहाटी :दत्तबरुवा पब्लिशिंग कोंपनी प्रा॰ लि॰,2016

शर्मा,शशि. *माधव कंदलिर रामायण,*पंचम.गुवाहाटी:जार्णाल एम्पोरियम,2011

शर्मा,सत्येंद्रनाथ.*असमीया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त.* गुवाहाटी: सौमार प्रकाश, 2009

हिन्दी:

हरदयाल और नगेंद्र. *हिन्दी साहित्य का इतिहास*.नई दिल्ली:नेशनल पब्लिशिंग हाउस,2012